रिकार्ड– ओम नमःशिवाय..... ओमशांति प्रातःक्लास 6–7–67

पहले2 बाप बच्चों को सावधानी देते हैं कि यहां बैठे हो तो अपने को आत्मा समझकर बैठो। बाप के आगे बैठे हो। टीचर के आगे भी गुरू के आगे भी बैठे हो। नम्बरवन बात है कि हम आत्मा हैं। बाप भी आत्मा है। टीचर भी आत्मा है। गुरू भी आत्मा है। एक ही है ना। यह नई बात तुम सुनते हो। तुम कहेंगे बाबा हम तो कल्प2 यह सुनते हैं। तो बुद्धि में यह याद रहे। बाप पढ़ाते हैं। हम आत्मायें इन आर्गन्स द्वारा सुनती हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों को यहां ही मिलता है उंच ते उंच बाप द्वारा। वो सब आत्माओं का बाप है। जो वर्सा देते हैं। क्या ज्ञान देते हैं?सबकी सदगति करते हैं माना (घर) ले जाते हैं। (कितने) को ले जावेंगे यह भी तुम्हीं जानते हो। मच्छरों सदृश सब आत्माओं को तो जाना ही है। सतयुग में एक ही धर्म सुख–शांति ,पवित्रता होता है। तुम बच्चों को चित्र पर समझाना बहुत सहज है। भल चित्र नहीं हो तो भी तुम समझा सकते हो। (नक्शे) पर समझाया जाता है ना यहां इंग्लैंड ,यहां यह है। फिर वो याद पड़ जाता है। यह भी ऐसा है। एक2 स्टुडेंट को समझाना होता है। महिमा भी एक की ही है शिवाय नमः। उंच ते उंच भगवान है ना। रचता बाप घर का बड़ा होता है ना। वो हद का यह बेहद का। यह तो है सारे बेहद के घर का बाप। यह फिर टीचर भी है। तुमको पढ़ाते हैं। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। तुम तो स्टुडेंट्स भी बड़े रॉयल हो। बाप कहते हैं कि मैं साधारण तन में आता हूँ। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो जरूर यहां ही चाहिए। उन बिना तो काम भी कैसे चल सकेगा?और जरूर बुजुर्ग ही चाहिए ना ;क्योंकि एडाप्टेशन है ना। तो बुजुर्ग चाहिए। कृष्ण का नाम रांग हो जाता है। फीचर्स भी हर एक जन्म2 के अलग2 होते हैं। ब्रह्मा बदल नहीं सकते हैं। बुजुर्ग शिव पिता भी है। बच्चे को थोड़े ही कोई बाबा कहेंगे। तो बच्चों को यही बुद्धि में रहना चाहिए कि हम किसके आगे बैठे हैं। अंदर में खुशी भी होनी चाहिए। स्टुडेंट्स को कहीं पर भी बैठे होंगे तो उनकी बुद्धि में तो बाप की भी याद आती है तो टीचर्स की भी याद .....है। उनका तो बाप अलग,टीचर अलग होता है। तुम्हारा तो एक ही बाप ,टीचर,गुरू है। यह भी तो (बाबा) स्टुडेंट है। पढ़ रहे हैं। सिर्फ लोन पर शरीर दिया हुआ है। और कोई फर्क नहीं है। बाकी तो तुम्हारे मुआफिक ही है। इनकी आत्मा भी वही समझती है जो तुम समझते हो। बलिहारी है ही एक की। उनको ही प्रभु,ईश्वर कहते हैं। दूसरे कोई देहधारी को नहीं कहा जा सकता है। इस ब्रह्मा को भी याद नहीं करना है। यह भी कहते हैं कि अपने को आत्मा समझ मुझ परमात्मा को याद करो। बाकी सभी सूक्ष्म वा स्थूल सभी देहधारियों को भूल जाओ। तुम शांतिधाम के रहने वाले हो। तुम हो बेहद के पार्टधारी। यह बातें और कोई भी नहीं जानते हैं। दुनियां भर में किसी को पता नहीं है। यहां जो आते हैं वो समझते जाते हैं और बाप की सर्विस में लगते जाते हैं। ईश्वरीय खिजमतगार ठहरे ना। बाप भी आये हैं खिजमत करने। पतितों को पावन बनाने की खिजमत करते हैं। राज्य गंवाया है फिर जब अभी दुःखी हुये तो हैं तो फिर बाप को बुलाया है। जिससे राज्य लिया है उनको ही बुलावेंगे ना। तुम बच्चे तो जानते हो कि बाप हमको सुखधाम का मालिक बनाने आये हैं। दुनियां में यह किसको भी पता नहीं है। हैं तो सभी भारतवासी एक ही धर्म के। यह है ही सुखधाम। सो जरूर जब नहीं हो तब ताक बाप आकर स्थापन करे। बच्चे समझते हैं कि भगवान जिनको सारी दुनियां अल्लाह और गॉड कहकर पुकारती है वो ही यहां पर ड्रामाअनुसार कल्प पहले मुआफिक आये है।। यह है ही गीता का एपीसोड। जिसमें बाप आकर स्थापना करते हैं। गाया भी जाता है ब्राह्मण और देवी देवता धर्म। क्षत्रिय नहीं कहते हैं। ब्राह्मण देवी देवताय नमः कहते हैं ;क्योंकि क्षत्रिय तो फिर भी दो कलायें कम हो गये ना। (स्वर्ग)कहा ही जाता है नई दुनियां को। त्रेता को नई दुनियां थोड़े ही कहेंगे। पहले2 सतयुग में है एकदम नई दुनियां। यह है पुराने ते पुरानी दुनियां। फिर ....तो नई दुनियां हो जावेगी। हम अभी नई दुनियां में जाते हैं। तभी तो बच्चे कहते है। हम नर से नारायण बनते हैं। कथा भी हम तो सत्यनारायण की ही सुनते हैं।

राम की कथा तो दुर्दशा की लिख दी है। राम कौन बनना चाहेगा जिसकी सीता चुराई गई। अभी तुम समझते हो कि ऐसे कुछ भी है नहीं ;परंतु ग्लानी तो कर दी है ना। ल.ना. की तो कब ग्लानी नहीं करते हैं। इसलिए नाम ही है सत्य नारायण की कथा। नर से नारायण बनने की कथा। प्रिंस बनने की कथा नहीं कहते हैं। सत्य नारायण की कथा है ;परंतु मनुष्य समझ नहीं सकते हैं। वो नारायण को अलग समझते हैं ;परंतु नारायण की कोई जीवन कहानी तो है नहीं। ज्ञान की बातें तो बहुत हैं ना। इसलिए ही सात रोज दिये जाते हैं। रोज भट्ठी में रहना पड़े ;परंतु ऐसे भी नहीं यहां आकर भट्ठी में रहना है। ऐसे तो फिर भट्ठी का बहाना करके बहुत ढेर आ जावें। पढ़ाई सवेरे और शाम को होती है। दोपहर में वायुमंडल ठीक नहीं होता है। रात्री का भी 10 से 12 तक बिल्कुल खराब समय होता है। उसी समय जैसे कि विषय वैतरणी में बहते हैं। आजकल तो ना रात ,ना दिन देखते हैं। पूरा वैश्यालय है। इनको कहा ही जाता है कामी कुत्ते। इस समय तमोप्रधानता है ना। यहां तुम बच्चों को यह मेहनत करनी है याद में रह सतोप्रधान बनने की। वहां पर तो सारा दिन काम में ही रहते हैं। ऐसे भी बहुत होते हैं जो धंधा आदि करते भी हैं, फिर पढ़ते भी हैं जास्ती अच्छी नौकरी करने के लिए। यहां पर भी तुम पढ़ते हो तो टीचर को याद करना पड़े, जो पढ़ाते हैं। अच्छा ,टीचर समझकर ही याद करो तो भी तीनों इकट्ठे याद आ जाते हैं। बाप ,टीचर ,गुरू तुम्हारे लिए तो बहुत सहज है। नई बात तो झट याद आनी चाहिए। यह हमारा बाबा बाप भी है,टीचर भी है,गुरू भी है। उंच ते उंच बाप है जिससे ही हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। हम तो स्वर्ग में जरूर जावेंगे। स्वर्ग की स्थापना जरूर होनी है। तुम पुरुषार्थ सिर्फ करते हो उंच पद पाने लिए। यह भी तुम जानते हो। मनुष्यों को भी पता पड़ेगा। तुम्हारा आवाज फैलता रहेगा। तुम श्रीमत पर कितना उंच काम कर रहे हो। तुम्हारी जैसी अलौकिक उंच सर्विस कोई कर नहीं सके। बाप भी अलौकिक सर्विस करते हैं। तुम भी अलौकिक सर्विस करते हो। यह ब्राह्मणों का धर्म है अलौकिक धर्म। बहुत थोड़े समय के लिए। तुम भी एक2 अलौकिक है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम अलौकिक काम करते हो जो कि दूसरा कोई कर नहीं सके। तुम ब्राह्मण धर्म वाले ही ऐसा काम करते हो। तो इसी काम में लग जाना चाहिए। इसमें ही बिजी रहना चाहिए। बाप भी तो बिजी रहते हैं ना। तुम तो राजधानी स्थापन कर रहे हो। वो तो पंचाचत मिलकर सिर्फ पालना करती है। यहां तुम गुप्त वेश में क्या कर रहे हो?तुम हो इनकागनीटो अननोन वारियर्स। नानवायलेंस इसका अर्थ भी कोई नहीं समझते हैं। तुम हो डबल अहिंसक सेना। बड़ी हिंसा तो यही विकार की है जो पतित बनाती है। इनको ही जीतना है। भगवानोवाच्य काम महाशत्रु है। इन पर ही जीत पाने पर तुम जगतजीत बनेंगे। मनुष्य इन बातों को समझ नहीं सकते। यह ल.ना. जगतजीत हैं ना। भारत जगतजीत था। यह विश्व के मालिक कैसे बने यह भी बाहर वाले समझ नहीं सके। इसे समझने में बुद्धि बड़ी विशाल चाहिए। बड़े2 इम्तिहान पढ़ने वालों की विशाल बुद्धि होती है ना। तुम श्रीमत पर अपना राज्य स्थापन करते हो। तुम किसी को भी समझा सकते हो विश्व में शांति थी ना। और कोई राज्य था नहीं। स्वर्ग में अशांति हो नहीं सकती। बहिश्त को कहते ही हैं गार्डन ऑफ अल्लाह। सिर्फ बगीचा ही थोड़े ही होगा। मनुष्य भी तो चाहिए ना। अभी तुम बच्चे समझते हो हम बहिश्त के मालिक बन रहे हैं। तुम बच्चों को कितना नशा रहना चाहिए। और उंच खयालात होने चाहिए। तुम बाहर की कोई भी सुख को नहीं चाहते हो। इस समय तुमको बिल्कुल ही सिम्पल रहना है। अभी तुम ससुर घर जाती हो। यह है पियर घर। यहां पर तुमको डबल पितायें मिले हैं। एक निराकार उंच ते उंच। दूसरा फिर साकार। वो भी उंच ते उंच। अभी तुम ससुर घर विष्णुपुरी में जाते हो। उनको कृष्णपुरी नहीं कहेंगे। बच्चे की पुरी नहीं होती है। विष्णु की पुरी अर्थात् ल.ना. की पुरी। तुम्हारा तो है ––राजयोग। तो जरूर नर से नारायण बनेंगे। बाप

कहते हैं अपने को आत्मा समझो। अभी तुम (खुदाईखिदमतगार)बने हो। कम से कम.....तो जरूर आत्मअभिमानी कर्मातीतपना चाहिए। नर से नारायण बनना है तो कर्मातीत अवस्था जरूर चाहिए। कोई कर्मबंधन रहे तो .....सजा खानी पड़े। बच्चे खुद भी समझते हैं याद की मेहनत बड़ी कड़ी है। युक्ति तो बहुत सहज है। सिर्फ बाप को याद करना है। भारत का प्राचीन राजयोग मशहूर है। योग के लिए तो है नालेज ,जो बाप ही आकर सिखाते हैं। कृष्ण को फिर स्वदर्शन चक्र दे दिया है। वो भी तो चित्र कितना रांग है। अभी तो तुमको कोई चित्र आदि भी याद नहीं करना है। सब कुछ भूलो। कोई में भी बुद्धि नहीं जावे। लाइन क्लीयर चाहिए। यह है पढ़ाई का समय। दुनियां को भूल अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना तब ही पाप नाश होंगे। नंगे आये थे अब फिर नंगे ही जाना है। बाप कहते हैं पहले2 तुम्हीं नंगे आये हो। फिर तुमको ही जाना है। तुम आलराउंडर हो। वो तो होते हैं हद के एक्टर्स। तुम हो बेहद के। अभी तुम समझते हो हमने अनेक बार पार्ट बजाया है। अनेक बार तुम बेहद के मालिक बनते हो। इस बेहद के नाटक अंदर फिर छोटे2 नाटक भी अनेकों बार चलते ही रहते हैं। (सत.) से कलियुग तक जो कुछ भी हुआ है वो रिपीट होता रहता है। उपर से लेकर अंत तक तुम्हारी बुद्धि में है। मूल,सूक्ष्म और सृष्टि का चक्र,बस। और किसी धर्म से तुम्हारा काम नहीं है। तुम्हारा धर्म तो बहुत सुख देने वाला है। हर एक अपने धर्म को जानते हैं। बाप तो बच्चों को ही सुनाते हैं। और धर्म वालों को थोड़े ही पढ़ाते हैं। उनका जब समय होगा तब वो आवेंगे। नम्बरवार जैसे2 आते हैं वैसे ही फिर जायेंगे भी। हम और धर्मों का क्या वर्ण करेंगे। तुमको तो सिर्फ ,सिर्फ एक बाप को याद करना है। चित्र आदि भी सब भूलकर एक बाप को याद करना है। ब्र.वि.शं. को भी नहीं। सिर्फ एक को। वो तो समझते हैं कि परमात्मा लिंग है। अब लिंग समान कोई वस्तु हो कैसे सकती है वो भला ज्ञान भी कैसे सुनावेगी?.....प्रेरणा से वा कोई लाउडस्पीकर रखेंगे जिससे तुम सुनेंगे। प्रेरणा से तो कुछ होता नहीं है। ऐसे नहीं कि शंकर कोई प्रेरते हैं। यह सब ड्रामा में पहले ही से नूंध है। विनाश तो होने का है ही। जैसे तुम आत्मायें शरीर द्वारा बात करती हो वैसे परमात्मा भी करते हैं। उनका तो पार्ट ही दिव्य और अलौकिक है। पतित को पावन बनाने वाला एक ही बाप है। कहते हैं मेरा पार्ट भी सबसे न्यारा है। जो कल्प पहले आये होंगे वो ही आते रहेंगे। जो कुछ भी पास्ट हुआ सो ड्रामा। उसमें जरा भी फर्क नहीं। फिर पुरुषार्थ का खयाल रखना है। ऐसे नहीं कि ड्रामा अनुसार हमारा कम पुरुषार्थ चलता है। फिर तो पद भी सारा कम हो जावेगा। पुरुषार्थ को तेज करना है। ड्रामा पर जोर नहीं देना है। अपने चार्ट को देखते रहो। बढ़ाते रहो। नोट रखो हमारा चार्ट बहुत बढ़ता जाता है?बहुत खबरदारी चाहिए। यहां पर तो तुम्हारा है ब्राह्मणों का संग। बाहर में तो सब है कुसंग। वो तो सब उल्टा ही सुनाते हैं। साधुओं आदि से तो तुम सब उल्टा ही सुनते आये हो। अब बाप तुमको कुसंग से निकालते हैं। कोई भी फैशन आदि की भी बात नहीं है। बाबा ने तो तुम बच्चों को सींध (चीर) {मांग} भी सीधी निकलवाई थी। आजकल तो कैसे2 बाल बनाते हैं। बाहर में जाते हैं तो पहरवास (पहनना) ही सारी बदल जाती है। यह तो जैसे कि अपने धर्म की इन्सल्ट करते हैं। देश,वेश ही बदल देते हैं। देहअभिमान हो जाता है। 50/100 रुपये देते हैं सिर्फ बाल बनाने में। इसको ही कहा जाता है अति देहअभिमान। वो फिर कब भी ज्ञान उठा नहीं सकते हैं। बाबा तो कहते हैं कि बिल्कुल सिम्पल बनो। उंची साड़ी पहनने पर भी देहअभिमान आ जाता है। हमको तो फुलवाइल की साड़ी पड़ी हुई है। देहअभिमान को तोड़ने लिए सब हल्का कर देना चाहिए। अच्छी चीज देहअभिमान को लाती है। तो इस समय वनवास में हो ना। हर चीज से मोह हटाना है। बहुत ही साधारण रहना है। शादी आदि में भी भले चले जाओ ;परंतु तोड़ निभाने अर्थ। फिर घर में आये तो सब उतार दिया। तुमको तो वाणी से परे जाना है ना। वानप्रस्थी तो सफेदपोश में होते हैं। तुम एक2 छोटे–बड़े सब वानप्रस्थी हो। सतयुग में तो इतने मनुष्य होंगे ही नहीं। बाकी सबको.....

तो तुम सब वानप्रस्थी हो। छोटे बच्चों को भी शिवबाबा की ही याद दिलानी है। उसमें ही कल्याण है। अब तो बस हमको जाना है शिवबाबा पास। कृष्ण को याद करने पर विकर्म विनाश नहीं होंगे। छोटे...बच्चे भी शिवबाबा–शिवबाबा कहते रहते हैं। यही आदत डालनी चाहिए। उनको भी अच्छा लगेगा ;क्योंकि बहुत हैं जो यहां के गये हुये हैं। तो बाप बच्चों को कहते रहते हैं कि कैसे भी हो देहअभिमान को तो जरूर छोड़ना है। कोई भी चीज का महत्व नहीं रहे। अपन को नंगा समझना है। सम्बंधियों से भी ममत्व तोड़ना है। बाबा की याद ही मोस्ट वैल्युएबल है। इसलिए ही भक्तिमार्ग में भी ब्राह्मण लोग यात्रा करते हैं। यात्रायें तो बहुत हैं ना। चारों धामों के कितने मंदिरों में जाते हैं। जहां–तहां माथा टेकते रहते हैं। पैसे रखते रहो। यहां पर तो वो बातें नहीं हैं। तुम बच्चों को बड़ी खुशी में रहना चाहिए। तुम तो बहुत हाइएस्ट स्टुडेंट हो। भगवान तुमको पढ़ाते हैं। तो यह भी तो मनमनाभव हुआ ना। हम स्टुडेंट्स हैं यह भी भूल जाते हैं। शादी किये हुये भी फिर पढ़ते हैं। टीचर को याद करते हैं। ओना रहता है कि हम उन्नति को पावें। तुमको तो बहुत उन्नति को पाना है। जास्ती हवश की भी दरकार नहीं है। यह तो सब खतम होना है पहले अपने को पावन बना लें। सिर्फ पैसे ही देने से कुछ भी नहीं होता है। पैसे देंगे तो बीज बोवेंगे ;परंतु पावन तो बनना है ना। नहीं तो सजायें खानी पड़ेंगी। ट्रिब्युनल में तो बाप भी बैठेंगे। फिर वहां पर सारा सा. होता है। तो धर्मराज भी है ना। विटेनसी वाले भी होते हैं। कि नहीं तो केस चलेगा,नहीं तो सजायें खाओगे। गर्भजेल में भी तो देखो आत्मायें कैसे सजा पाती हैं। बाहर से पता थोड़े ही पड़ता है। अंदर में तो कितना दुःख होता है। यहां तो कहा ही जाता है गर्भजेल। वहां तो गर्भ भी महल में रहते हो। इस पर तो सुखदेव की कथा भी है। सुखदेव तो तुम्हीं सब बनते हो। अभी हो दुःखदेव। देने वाले को देव कहा जाता है। दुःख देने वाले को तो देव भी नहीं कहेंगे। अभी तो तुम एक2 सुखदेव बन रहे हो। जब तुम सुखी रहते हो तब तुमको देवता कहा जाता है। तुम बच्चों को तो देह का अभिमान उड़ाता है। कदम2 पर सावधानी चाहिए। जास्ती तो पैसे भी क्या काम आवेंगे। बाबा ने अपना भी मिसाल बताया। समझा अब तो हमको अविनाशी कमाई करनी है। इन विनाशी पैसों का क्या करेंगे?फिर कितनी जल्दी इस कमाई में लग गये। यहां पर तो तुम बच्चों को पैसों की कोई दरकार नहीं है। शिवबाबा के भंडारे से खावेंगे। भूखों थोड़े ही मरेंगे। इसी कमाई में लग जाना चाहिए। इससे फायदा बहुत होगा। कुमारियां फिर भी बंधनमुक्त हैं। शादी की, बच्चे पैदा किये तो फिर विकार में भी गये तो याद की रग पड़ती ही जाती है। यहां पर तो सबकी ही याद मिटानी है। युगल बनते हैं तो भी मुसीबत है। दूसरे की भी याद नये सिर खड़ी हो जाती है। वो मिटानी पड़े। इसलिए कुमारियों के लिए तो बहुत अच्छा है। तुमको तो अविनाशी सर्जन मिला है। वो तुमको एवर हेल्दी,एवर वेल्दी बनने की युक्ति बतावेंगे। सर्जन भी है तो टीचर भी है। आत्मा को ही इंजेक्शन लगता है। जिससे ही वो एवर हैल्दी बनते हैं। सिर्फ बाप को याद करना है। बाप आत्माओं को ही इंजेक्शन लगाते हैं मनमनाभव का। तो अमल में लाना चाहिए ना। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। मूल बात है यह। इसलिए ही बाबा कहते हैं कि चार्ट रखो। याद से ही पाप कटते जावेंगे। ज्योति जगती जावेगी। पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनने जा रहे हो। जिन्होंने यह मेहनत कल्प पहले की है। वो ही अब भी करते रहेंगे। अब तुम जानते हो कि हमको अपने घर शांतिधाम में जाना है। कोई गर्भ में नहीं जाना है। मनुष्य समझते हैं कि एक शरीर छोड़कर दूसरा लेना है। तुम तो अब समझते हो कि हम घर चले जावेंगे। एक ही घर में भी अनेक मतें हो जाती हैं। .....
..वो हंस ,वो बगुला। फिर कितने झगड़े हो पड़ते हैं। नथिंग न्यू। कल्प पहले भी हुआ था। अब भी हो रहा है। पति के लिए संगमयुग तो स्त्री के लिए कलियुग। यही लगा रहता है ;लेकिन यह समय है ही इस कमाई का। गरीब तो अपनी बाल बेटी में ही खुश रहते हैं। तुमको पुरुषार्थ उस कमाई का करना है। ओम